जनता की नाव

कुछ लोग व्यवस्थाकी रस्सीसे बंधी नाव खे रहे है
संपूर्ण विकास का जायका लिए है
लाख खेते है नाव हिलती नही
एक दुसरेंको गालियाँ दे रहे है
जब मैने उनको कहॉ, अरे भाई रस्सी को काटो
और नाव को आगे बढाओ
वो सभी गुस्सा होके बोले, बेवकुफ तुम्हारे दिमागमे भुसाँ भरा है
काम के समय ऐसी बातेांको उठाते हो ?
आना है तो आओ, तुम भी पतवार चलाओ
तुम्हारे जैसे सिरफिरेही काम के समय ऐसी बातोंको उठाते है
जानता नही रस्सी काटनेसे नाव बह जानेका खतरा है
रही रस्सीकी बात, वो एक ना एक दिन टूट जायेगी
नही तो हम व्यवस्थासेही इतनी लंबी रस्सी मंगायेंगे
की बँधी होनेके बावजूद नावको मन्जिले मकदूद ले जाये
आना है तो आओ तुम भी पतवार चलाओ
सचमूच मै उनकी बातोंको समझता नही,
और कुदकर तैरने लगता हूँ
आवाजे आती है, अच्छा हुआ अब काम के समय सवालोंको
कोई उठायेगा नही, लेकिन इसके बाल बच्चोंका क्या होगा ?
हर लहर मुझे थपडे मारती है, हर लहर मुझे डुबाना चाहती है
लेकिन हर लहर मुझे तैरनाभी सिखाती है
मै मुडके देखता हूँ, तो दूर किनारेंपर
कुछ लोग व्यवस्थाकी रस्सीसे बँधी नाव खे रहे है
संपूर्ण विकास का जायका लिए है

शामबहादूर नम्र.